NEXUS UNIVERSAL JOURNAL ISSN: 3108-0367

www.nujournal.in DOI: 10.68013/nuj.

Volume 2, Issue V: July-August, 2026 (Page:1-13)

Received: July 30, 2026; Received in revised form: August10, 2026; Accepted: August17, 2026; Published: August 22, 2026

सतबीस देवरी की मूर्तिकला में अप्सराओं द्वारा परिलक्षित सामाजिक जीवन

शंकर बाई मीना, शोधार्थी [1]

डॉ बीना [2]

1 शंकर बाई मीना, शोधार्थी, इतिहास विभाग, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा

2 डॉ बीना, सह प्राध्यापक, इतिहास विभाग

शोध सार–

मूर्तिकला इतिहास को जानने का महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत है, मूर्तिकला न केवल अतीत के गौरव को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण है, अपितु धार्मिक व सांस्कृति प्रगति के मापदण्ड तथा समकालीन लौकिक जन–जीवन की तस्वीर प्रकट करते है। इस शोध पत्र में मैंने समकालीन लौकिक जीवन की एक झांकी प्रस्तुत करने हेतु मंदिर अलंकरण हेतु सतबीस देवरी मंदिर परिसर में मंडोवर तथा सभामण्डप के बाह्य भाग में नारी अलंकरण में विविध अप्सराओं का अंकन किया गया है। जिसमें मातृत्व के प्रतीक हेतु पुत्रवल्लभा, संगीत तथा नृत्य के प्रतीक हेतु सारंगवादिनी, वीणावादिनी, शहनाईवादिनी, श्रृंगारप्रियता हेतु दर्पणा, आलस्य सुन्दरी, हंसावली, पशुप्रेम हेतु शुकसारिका, वानर को भगाती हुई अप्सरा आदि का अंकन किया गया है। इन प्रतिमाओं से हमें तत्कालीन सामाजिक स्थिति तथा नारी की स्थिति का आंकलन करने में सहायता मिलती है।

बीज शब्दः– मूर्तिकला, लौकिक जीवन, सतबीस देवरी, मंडोवर, सभामण्डप, अप्सरा, वीणा वादिनी, शुकसारिका, हंसावली, दर्पणा

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

शोध पत्र

प्राचीन इतिहास को जानने में मूर्तिकला का पुरावात्विक स्रोतों में महत्वपूर्ण स्थान है। मूर्तियाँ हमारे अतीत के गौरव को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण है। भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक अध्ययन एवं उसके समुचित ज्ञान के लिए मूर्तिकला का अध्ययन आवश्यक है। किसी देश की संस्कृति में स्थापत्य कला तथा ललित कलाओं की स्थिति उनमें अधिगत कुशलता, उस देश की सांस्कृतिक प्रगति का मापदण्ड प्रस्तुत करती है। भारतीय मूर्तिकला का विषय मुख्यतः धार्मिक रहा है और धार्मिक इतिहास के विकास के कलात्मक अवशेषों का अध्ययन पर कलाकारों ने महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है। मूर्तिविज्ञान से हम न केवल प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक जीवन में परिचित होते हैं, अपितु लौकिक जन–जीवन की तस्वीर भी सामने प्रकट होती है। भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं लौकिक जन–जीवन से ओत–प्रोत विशेषताएं सातबीस देवरी के मूल तथा उसके सहायक मंदिरों की मूर्तिकला का विषय भी धार्मिकता लिये हुए हैं लेकिन शिल्पकारों ने भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के उन सभी तत्वों यथा दर्शन, अध्यात्म, अभिव्यक्ति, प्रतीक–चिह्नों, नृत्य, वादन, गायन आदि को बड़ी कुशलता, गम्भीर एवं प्रभावित करने की क्षमता के साथ उकेरा हैं।

सतबीस देवरी परिसर में मंदिरों के सभामण्डप व मण्डोवर भाग पर स्थित मूर्तिकला में उत्कीर्ण चित्र तत्कालीन लोक जीवन के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन को सफलतापूर्वक उत्कीर्ण किये गए हैं। शिल्प में समाज के विभिन्न वर्ग तथा क्रियाओं यथा– नारी जीवन, वस्त्र, आभूषण, सैनिक, साधु–सन्यासी, युद्ध, शिकार, मनोरंजन, योग–साधना, गणिका, वाद्य यन्त्र, नृर्तक–नृर्तकी, संगीतज्ञ, श्रृंगार–प्रसाधन, केश–विन्यास आदि का अंकन किया गया है।

मंदिर के बाह्य मंडोवर भाग में के अनेक दिग्पाल, अप्सरा व दैविय स्वरूप, व्याल, सर्प, सामाजिक जीवन से सम्बन्धित विषयों का निरूपण हुआ है। स्वरूपों की अनेक स्थानों पर पुनरावृत्ति हुई हैं। अप्सरा स्वरूपों में वीणावादिनी, सारंगवादिनी, पुत्रवल्लभा, तलवार व ढाल धारण किए अप्सरा योद्धा, बांसुरीवादिका, शुकसारिका, सद्यः स्नाता, दर्पणा, आलस्य सुन्दरी, शहनाईवादिनी, चंवरधारिणी, हंसावली (पैर में पायल बांधती हुई), नृत्यरत आदि अनेक अप्सराओं का अंकन मंदिर में जगह–जगह पर हुआ है।

सतबीस देवरी जैन मंदिर

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में कुम्भा महल के आगे बड़ी पोल के अन्दर प्रवेश करते ही बांयी तरफ सातबीस देवरी जैन मंदिर स्थित है। मंदिर के बाहर लगी पुरातत्व विभाग के शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण संभवतः 1448 में हुआ था। जैन धर्म के लेखक डॉ. ए. एल. जैन के अनुसार सातबीस देवरी का निर्माण ईस्वी सन् 957 में प्रारम्भ हुआ और ईस्वी सन् 972 में पूरा हुआ था।1 इस सम्पूर्ण मंदिर परिसर में 27 देवरियाँ या देव कुलिकाएँ होने के कारण इसे 'सातबीस देवरी' के नाम से पुकारा जाता है। मंदिर के अन्दर की गुम्बदनुमा छत व खम्भों पर की गयी खुदाई को देखकर आबू, देलवाड़ा के जैन मंदिरों की याद आती है।

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

मंदिर स्थापत्य–मंदिर स्थापत्य को तलछन्द व उर्ध्वछन्द में बांटा जा सकता है। तलछन्द में गर्भगृह, गूढमण्डप, त्रिक मण्डप, मण्डप व श्रृंगार चौकी है, जबकि उर्ध्वछन्द में वेदीबंध भाग में भिट्ट, पीठ, जाड्यकुम्भ, कर्णिका व कीर्तिमुखों की पंक्तियुक्त ग्रासपट्टिका है, मंडोवर भाग में खुरा, कुम्भक, कलश, अंतराल, कपोतालिका, मंचिका, जंघा, उरूजंघा, भरणी, शिरावाटी, तथा छाद्य भाग है, जबकि शिखर भाग नागर शैली का है, जिसमें मूलश्रृंग, उरूश्रृंग, कर्णश्रृंग, नासिका, स्कन्ध, ग्रीवा, आमलक, चन्द्रिका, कलश, बीजपूरक इत्यादि है। इस मंदिर के गर्भगृह के अन्दर श्याम वर्ण की आदिनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है, ये ध्यान मुद्रा में बैठे हुए है और इनके दायीं ओर शीतलनाथ और बांयी ओर सुमतिनाथ की श्वेत पाषाण से निर्मित छोटी–छोटी प्रतिमाएँ विराजमान है।

चित्र संख्या–1 सतबीस देवरी परिसर का प्रवेश द्वार (पश्चिम दिशा से लिया गया फोटो)

चित्र संख्या– 2 सतबीस देवरी मूल मंदिर तथा 26 देवरियाँ, बड़ी देवरी एक व दो के साथ (पूर्व दिशा से लिया गया फोटो)

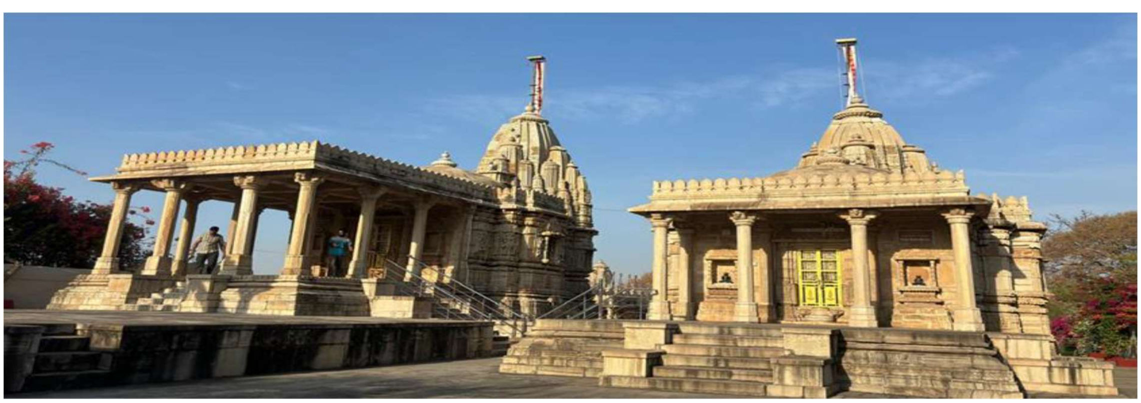

चित्र संख्या– 3 पूर्वाभिमुखी उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर उत्तर–पूर्व दिशा से लिया गया फोटो

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

मूलमंदिर के अतिरिक्त उत्तर, दक्षिण तथा पश्चिमी भाग में 26 छोटी–छोटी देवकुलिकाएं है, इस कारण इस मंदिर को सातबीस देवरी (मूलमंदिर तथा 26 देवकुलिकाएं) कहा जाता है। इन देवकुलिकाओं के अतिरिक्त दो बड़ी देवरियां है, जो प्रथम देवकुलिका के दांयी ओर तथा छब्बीसवीं देवकुलिका के बांयी ओर है, जो कि मूलमंदिर के उत्तर व दक्षिणी भाग में है। इनके अतिरिक्त मंदिर परिसर में पूर्वाभिमुखी दो पार्श्वनाथ जैन मंदिर है, जिनका मूर्तिशिल्प देखने योग्य है।

उत्तर दिशा के पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण 1448 ई. में भंडारी श्रेष्ठी (संभवतः वेला) ने करवाया, जिन्होंने श्रृंगार चंवरी का जीर्णोद्धार भी करवाया था। दक्षिण दिशा के पूर्वाभिमुखी पार्श्वनाथ जैन मंदिर का निर्माण तोलाशाह दोषी तथा उसके पुत्र कर्माशाह ने 1530 ई. में करवाया।2

सातबीस देवरी मन्दिर परिसर में मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप के जंघा भाग पर अनेक देवी–देवताओं की प्रतिमाएं, गन्धर्व, नायिकाएं, साधु–सन्यासी व अप्सराओं का अंकन किया गया है। मैंने इस शोध–पत्र में इन मन्दिरों के मंडोवर व सभामण्डप के बाह्य भाग पर उत्कीर्ण नायिकाओं एवं अप्सराओं के भेद एवं विशेषताए बताने का प्रयास किया है।

मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप के बाह्य भाग में बनाई गयी अप्सराओं की प्रतिमाएं–

अप्सरा योद्धा– इन प्रतिमाओं में अप्सरा को खड्ग व ढाल के साथ किसी अन्य व्यक्ति (जो कि खड्ग व ढाल से युक्त है) से युद्धरत दिखाया गया है अप्सरा का एक पैर ऊपर उठा हुआ, जबकि दूसरा पैर जमीन पर ठिका हुआ है। अप्सरा को सुदीर्घ नयन, सुन्दर केशसज्जा तथा वस्त्राभूषणों से युक्त उत्कीर्ण किया गया है।3

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर में, दक्षिणाभिमुखी, तलवार से वार करते हुए, दक्षिण पूर्वी दिशा अर्थात् सभामण्डप के आग्नेय कोण में अवस्थित। (देखिए चित्र संख्या–4 अ), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर में, दक्षिण पश्चिमी कर्णताख में अर्थात् मंडोवर के नैऋत्य कोण में, दक्षिणाभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–4 ब), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप के उत्तर– पश्चिमी भाग में, पश्चिमाभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–4 स), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, दक्षिणाभिमुखी, दक्षिण पश्चिमी कर्णरथ में (देखिए चित्र संख्या–4 द), सातबीस देवरी मूल मंदिर के सभामण्डप भाग में दक्षिण भद्रताख के दांयी ओर, दक्षिणाभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–4 य), सातबीस देवरी मूल मंदिर मंडोवर के दक्षिण–पश्चिमी कर्णरथ में दक्षिणाभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–4 र), सातबीस देवरी मूल मंदिर में सभामण्डप के उत्तर–पूर्वी कर्णरथ में उत्तराभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–4 ल)

अ

ब

स

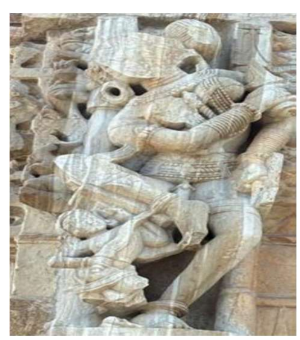
द

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

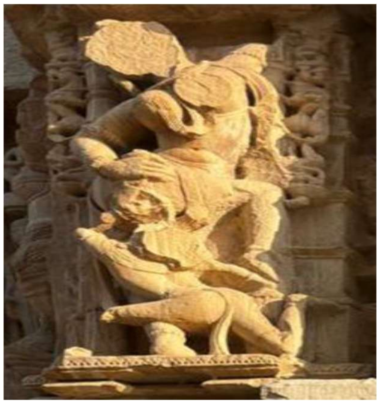

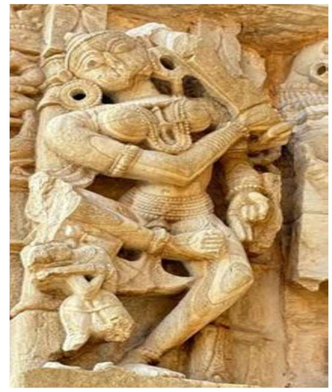

य र ल

चित्र संख्या– 4 अप्सरा योद्धा

बांसुरीवादिका–गर्भगृह के बाहय मंडोवर भागों में रमती हुई, वस्त्राभूषणों से सुसज्जित, अपने दोनों हाथों में बाँसुरी लेकर बजाते हुए मग्न, कटि से ऊपर वाला मुख भाग तथा कटि से नीचे पृष्ठ भाग का उत्कीर्णन किया गया है।4 दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर, पूर्वाभिमुखी, गर्भगृह के बाहय मंडोवर भाग में, आग्नेय कोण में बांसुरी बजाते हुए। (देखिए चित्र संख्या–5 अ), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, पश्चिमाभिमुखी, गर्भगृह के बाहय मंडोवर भाग में उत्तर पश्चिमी कर्णरथ में (देखिए चित्र संख्या–5 ब), सातबीस देवरी मंदिर के सभामण्डप भाग में, उत्तराभिमुखी, उत्तर–पश्चिमी दिशा में, प्रतिमा के पटल पर 'वारूदवतृवोषा' लिखा हुआ है, जो संभवतः शिल्पकार का नाम है। (देखिए चित्र संख्या–5 स), सातबीस देवरी मंदिर के सभामण्डप भाग में, पूर्वाभिमुखी, उत्तरी पूर्वी दिशा में। (देखिए चित्र संख्या–5 द)

अ ब स द

चित्र संख्या–5 बांसुरी वादिका अप्सर

नृत्यरत अप्सराएं– नृत्यांगनाओं का अंकन मंदिर के सभी स्थान पर हुआ है। अन्य अप्सराओं और दिक्पाल आदि के मध्य अनेक स्थानों पर ये रमती हुई अंकित हुई हैं। इन सभी अप्सराओं की प्रतिमाओं में वस्त्र और आभूषणों में भिन्नता नजर आती है।5

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप की दक्षिणी भद्रताख के बांयी ओर, दक्षिणाभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–6 अ), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के दक्षिण–पश्चिमी कर्णरथ में, अर्थात् मंडोवर के नैऋत्य कोण में, पश्चिमाभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–6 ब), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पश्चिमी कर्णरथ में, उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–6 स), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तरी भद्रताख के बांयी ओर उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–6 द), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग की भद्रताख के दांयी ओर पश्चिमाभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–6 य), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के दक्षिण पश्चिमी कर्णरथ में पश्चिमाभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–6 र), सातबीस देवरी मूल मंदिर के सभामण्डप का दक्षिण–पूर्वी भाग में दक्षिणाभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–6 ल), सातबीस देवरी मूल मंदिर के सभामण्डप की दक्षिणी भद्रताख के बांयी ओर दक्षिणाभिमुखी, प्रतिमा के नीचे पटल पर 'सूत्रतोलरा' उत्कीर्ण है, अर्थात् इस प्रतिमा का सूत्रधार तोलरा है।(देखिए चित्र संख्या–6 व), सातबीस देवरी मूल मंदिर के मंडोवर भाग की उत्तरी भद्रताख के बांयी ओर उत्तराभिमुखी, प्रतिमा के नीचे लेख उत्कीर्ण है, किन्तु अस्पष्ट है।(देखिए चित्र संख्या–6 श), सातबीस देवरी मूल मंदिर के सभामण्डप के उत्तर पूर्वी भाग में पूर्वाभिमूखी। (देखिए चित्र संख्या–6 ष), सातबीस देवरी मूल मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पूर्वी कर्णरथ में पूर्वाभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–6 स), सातबीस देवरी मूल मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पूर्वी कर्णरथ में उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–6 ह)

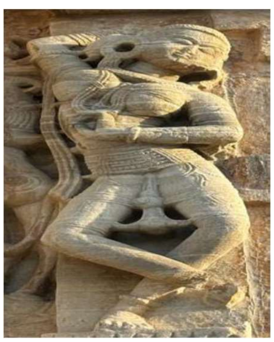
अ

ब

स

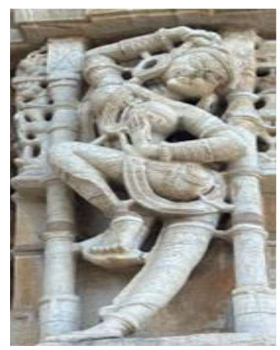
द

य

र

ल

व

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

श स ष ह

चित्र संख्या– 6 नृत्यरत देवांगना

पुत्र वल्लभा/आम्रलुम्बी– संसार की सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य है, उसमें भी स्त्री का स्थान सर्वोपरि है। मूर्ति कला में माता एवं पुत्र की ललित क्रीड़ाओं को प्रदर्शित किया गया है। मंदिरों के मण्डोवर भागों में प्रत्येक माता के पास उसके मातृत्व का प्रतीक शिशु बालक अवश्य दिखाई देता है। माता शिशु को गोद में उठाए हुए है तथा दूसरे हाथ में आम्रलुम्बी धारण कर शिशु को लुभाने का प्रयास कर रही है। शिशु माता की ओर देख रहा है तथा शिशु का एक हाथ स्तन पर है, सम्भवतः वह स्तनपान करना चाहता है। माता आभूषणों से सुसज्जित है।6

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर में जंघा भाग में, दक्षिणाभिमुखी, मंडोवर भाग की दक्षिण पूर्वी कर्णताख में त्रिभंग मुद्रा में, अपनी बांयी अंक में बालक, तथा दांयी भुजा में आम्रलुम्बी धारण किए हुए है। इस अप्सरा की चोटी बहुत ही आकर्षक है। अप्सरा तथा बालक का मुख तथा दांया पैरा खण्डितावस्था में है। (देखिए चित्र संख्या अ), सतबीस देवरी के जंघा भाग में, उत्तराभिमुखी, उत्तर–पश्चिमी कर्णरथ में, इसमें बालक का मुख खण्डितावस्था में है। माता की दोनों भुजाएं कोहनी तक चूड़ियों से भरी हुई है। (देखिए चित्र संख्या ब)

चित्र संख्या– 7 पुत्रवल्लभा अ, ब

चित्र संख्या– 8 हंसावली

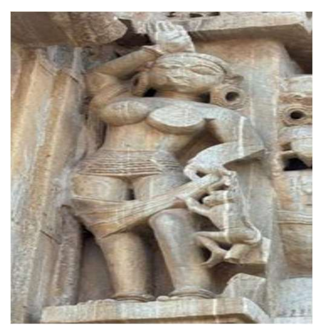

चित्र संख्या– 9 वानर के बच्चे के साथ अप्सरा

हंसावली (पैर में घुंघरू/पायल बांधती हुई अप्सरा)– उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, उत्तराभिमुखी, मंडोवर भाग में उत्तर पश्चिमी कर्णरथ में अतिभंग मुद्रा में वस्त्राभूषणों से सुसज्जित अप्सरा अपने बांये पैर को ऊपर उठाकर दोनों हाथों से उसमें घुंघरू/पायल पहनने में मग्न है। इस प्रतिमा के बांयी नीचे की एक परिचर के हाथ में दूसरी पायल है। शिल्पी ने इस शिल्प में अप्सरा को सुरुचिपूर्ण श्रृंगार करते हुए बड़ी कलात्मकता से अंकित किया हैं।7 (देखिए चित्र संख्या–8)

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

वानर को भगाती हुई अप्सरा– उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, उत्तराभिमुखी, उत्तरी भद्रताख के बांयी ओर इस प्रतिमा में अप्सरा के बांये पैर पर वानर के बच्चे को चढ़ते हुए तथा अप्सरा के बांयी भुजा के वस्त्र को छीनते हुए दर्शाया गया है, अप्सरा अपनी दांयी भुजा, जो कि उपर उठी हुई है, वानर के बच्चे को भगाने का प्रयास कर रही है। अप्सरा ने अल्प वस्त्राभूषण धारण किए हुए है।8 (देखिए चित्र संख्या–9)

ढोलकवादिनी/सारंगवादिनी अप्सरा– मंदिर मे ढोलकवादिनी अप्सरा की कई प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। सभी की विशेषताओं में भिन्नता है। इनमें से कुछ प्रतिमाओं के हाथ में छोटा ढोलक है तो किसी के हाथ मे बड़ा ढोलक है। इनके वस्त्रों व आभूषणों मे भी भिन्नता है, कुछ प्रतिमाएं साधारण है तो कुछ पूर्ण रूप से आभूषणों से सुसज्जित है। ढोलक पर थाप दे रही ये प्रतिमाएं मंदिर के मूलप्रसाद मण्डोवर, स्तम्भों पर, जंघा भाग पर व अनेक स्थानों पर उत्कीर्ण हैं।9 (देखिए चित्र संख्या–10)

उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप भाग के उत्तर–पश्चिमी में उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–10 अ), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर पश्चिमी कर्णरथ में पश्चिमाभिमुखी, इस प्रतिमा का मुख खण्डितावस्था में है।(देखिए चित्र संख्या–10 ब), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के दक्षिण–पूर्वी कर्णरथ में पूर्वाभिमुखी, प्रतिमा के घुटनों से नीचे दोनों पैर खण्डितावस्था में है।(देखिए चित्र संख्या–10 स), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पूर्वी कर्णरथ में पूर्वाभिमुखी है, प्रतिमा ने घुटनों तक अधोवस्त्र धारण कर रखा है,

जिसमें डिजाइने स्पष्ट दिखाई दे रही है।(देखिए चित्र संख्या–10 द), दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप की उत्तरी भद्रताख के बांयी ओर। (देखिए चित्र संख्या–10 य), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पूर्वी कर्णरथ में उत्तराभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–10 र), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग की उत्तरी भद्रताख के दांयी ओर, उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–10 ल), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर–पश्चिमी कर्णरथ में, उत्तराभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–10 व), सातबीस देवरी मूल मंदिर के बाह्य सभामण्डप का दक्षिण पश्चिमी भाग, पश्चिमाभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–10 श), सातबीस देवरी मूल मंदिर के मंडोवर भाग में दक्षिण–पूर्वी कर्णरथ में दक्षिणाभिमुखी।(देखिए चित्र संख्या–10 ष)

अ

ब

स

द

य

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

र ल व श ष

चित्र संख्या–10 ढोलक/सारंगवादिनी अप्सरा

वीणावादिनी–मंदिर में वीणा वादन करती हुई अप्सराएं उत्कीर्ण है। मंदिर के मण्डोवर जंघा भाग पर व अनेक स्थानों पर अंकित है। अधिकांशतः इनका त्रिभंगी मुद्रा में उत्कीर्णन हुआ है। इन प्रतिमाओं में आभूषणों का ज्यादा प्रयोग नहीं किया गया हैं।10

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर, उत्तराभिमुखी, उत्तर पूर्वी कर्णताख में वीणा धारण किए हुए, इस प्रतिमा के नीचे बांयी ओर एक और स्त्री प्रतिमा है, जिसके हाथों में ढोलक बजाते हुए उत्कीर्ण है।(देखिए चित्र संख्या–11 अ), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, पश्चिमी मंडोवर भाग में उत्तर–पश्चिमी कर्णरथ में, पश्चिमाभिमुखी, मुख खण्डितावस्था में है। (देखिए चित्र संख्या–11 ब), सातबीस देवरी मूल मंदिर के उत्तरी सभामण्डप बाह्य भाग में, पूर्वाभिमुखी, इस प्रतिमा में नीचे से दोनों पैर खण्डितावस्था में है।(देखिए चित्र संख्या–11 स), सातबीस देवरी मूल मंदिर के दक्षिणी सभामण्डप बाह्य भाग में पूर्वाभिमुखी, प्रतिमा का बांया पैर खण्डितावस्था में है।(देखिए चित्र संख्या–11 द), सातबीस देवरी मूल मंदिर के पूर्वी मंडोवर भाग में दक्षिण पूर्वी कर्णरथ में, पूर्वाभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–11 य), सातबीस देवरी मूल मंदिर के उत्तरी सभामण्डप की बाह्य भद्रताख के दांयी ओर। (देखिए चित्र संख्या–11 र), सातबीस देवरी मूल मंदिर के पूर्वी मंडोवर भाग की भद्रताख के दांयी ओर।

(देखिए चित्र संख्या–11 ल), सातबीस देवरी मूल मंदिर के उत्तरी मंडोवर भाग में, उत्तराभिमुखी, उत्तर–पूर्वी कणरथ में। (देखिए चित्र संख्या–11 व)

अ ब स द

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

य र ल व

चित्र संख्या–11 वीणावादिनी

शहनाई वादिका– मंदिर के विभिन्न भागों में अप्सराएं नृत्यरत मुद्रा में वस्त्राभूषण धारण किए, शहनायी का वादन कर रही है। प्रतिमाओं में एक हाथ में शहनायी का वादन करते हुए तथा दूसरे हाथ के सिर के ऊपर उत्कीर्ण किया गया है। प्रतिमाओं में कटि से ऊपर का मुख भाग तथा कटि से नीचे का पृष्ट भाग दिखाया गया है।11

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप के बाह्य भाग में उत्तरी भद्रताख के दांयी ओर, उत्तराभिमुखी (देखिए चित्र संख्या–11 अ) उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के दक्षिणी मंडोवर भाग की भद्रताख के दांयी ओर दक्षिणाभिमुखी, प्रतिमा के नीचे से दांया पैर खण्डितावस्था में है। (देखिए चित्र संख्या–11 ब) उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के दक्षिणी सभामण्डप का दक्षिण–पश्चिमी भाग में पश्चिमाभिमुखी। (देखिए चित्र संख्या–11 स)

अ ब स

चित्र संख्या– 12 शहनायी वादिका अप्सरा

शुकसारिका– दाहिना हाथ स्कन्ध की और किए हुए, उस पर शुक (तोता) बिठाया हुआ है, जबकि बांयी भुजा सिर के उपर की ओर कर रखी है, जो संभवतः नृत्य मुद्रा में है। यह अप्सराएं वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित हैं।12

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर, पूर्वाभिमुखी, गर्भगृह के बाह्य मंडोवर भाग में, आग्नेय कोण में (देखिए चित्र संख्या–11 अ) दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर, पश्चिमाभिमुखी, उत्तर पश्चिमी कर्णरथ में, इस प्रतिमा के नीचे के पटल पर 'सवा' उत्कीर्ण है। (देखिए चित्र संख्या–11 ब) उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के सभामण्डप भाग में, पश्चिमाभिमुखी, दक्षिण–पश्चिमी भाग में (देखिए चित्र संख्या–11 स)

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

चित्र संख्या– 13 शुकसारिका अ, ब, स

चित्र संख्या– 14 सद्यस्नाता अ, ब

सद्यः स्नाता (बाल निचोड़ती हुई)–मंदिर के मंडोवर भाग में इस अप्सरा का अंकन हुआ है। इस अप्सरा के बाल आगे स्कन्ध के सहारे नीचे की ओर लटक रहे हैं। बालों से झरते पानी की बूंदों को नीचे उत्कीर्ण हंस अपनी चोंच से ले रहा है। अप्सरा के अंग–प्रत्यंग स्पष्ट दिखाई दे रहे है, इसे देखकर लगता है कि अप्सरा स्नान के तुरन्त पश्चात् अपने बालों को निचोड़ रही है।13

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर, दक्षिणभिमुखी, दक्षिण पश्चिमी कर्णरथ में (देखिये चित्र संख्या–14 अ) उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, दक्षिण पश्चिमी कर्णरथ में, दक्षिणाभिमुखी, दक्षिण पश्चिमी कर्णरथ में। (देखिये चित्र संख्या–14 ब)

दर्पणा– हाथ में दर्पण लेकर मुखदर्शन करती या स्वयं को संवारते हुए अप्सरा मंदिर के मंडोवर भाग में इस स्वरूप का अंकन हुआ है। सभी प्रतिमा हाथ में दर्पण लेकर मुख दर्शन कर रही है। ये सभी प्रतिमाएं वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं।14

दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर में, पश्चिमाभिमुखी, गर्भगृह के मंडोवर भाग के दक्षिण–पश्चिमी कर्णरथ में। (देखिये चित्र संख्या–15 अ) उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर, दक्षिणाभिमुखी, दक्षिण पूर्वी कर्णरथ में, प्रतिमा का दांया पैर तथा दांया हाथ खण्डितावस्था में है, तथा बांयी भुजा में दर्पण में मुखदर्शन करती हुई प्रतिमा। (देखिये चित्र संख्या–15 ब) सातबीस देवरी, दक्षिणी सभामण्डप, दक्षिण पूर्वी भाग, पूर्वाभिमुखी, प्रतिमा का बांया हाथ सिर के ऊपर तथा दांये हाथ में दर्पण धारण किए हुए, जिसमें मुखदर्शन करती हुई प्रतीत हो रही है। (देखिये चित्र संख्या–15 स)

अ ब स

चित्र संख्या– 15 दर्पणा

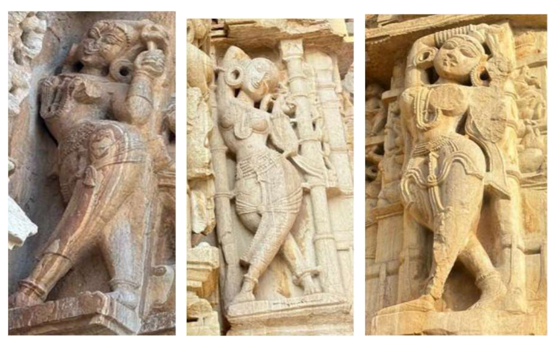

अ ब स

चित्र संख्या– 16 अलसकन्या

आलस्य सुन्दरी/अलसकन्या– यह सुन्दरी आलस्य से युक्त होती है। नायिका दोनों हाथों को ऊपर उठाये आलस्य युक्त त्रिभंगी मुद्रा में उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा परम्परागत वस्त्राभूषणों से सुसज्जित है। ऐसा प्रतीत हो रहा हैं कि यह अभी– अभी सो कर उठी है। दोनों हाथ ऊपर ले जाकर आलस्य ले रही है।15

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग के उत्तर पश्चिमी कर्णरथ में उत्तराभिमुखी।(देखिये चित्र संख्या–16 अ), सातबीस देवरी मूल मंदिर के बाह्य सभामण्डप के उत्तर–पूर्वी भाग में, पूर्वाभिमुखी।(देखिये चित्र संख्या–16 ब), सातबीस देवरी मूल मंदिर के मंडोवर भाग के दक्षिण–पूर्वी कर्णरथ में दक्षिणाभिमुखी। (देखिये चित्र संख्या–16 स)

चंवर धारणी– नायिका के एक हाथ में चामरा तथा दूसरा हाथ कट्यावलम्बित मुद्रा में कटि के नीचे जंघा पर रखा हुआ है। द्विभंग अवस्था में खड़ी है। वस्त्राभूषण से अलंकृत प्रतिमा है। चंवरधारिणियों की प्रतिमाएं देव व देवी प्रतिमाओं के दांयी व बांयी ओर चंवर हाथ में धारण किए हुए होती है। कहीं–कहीं स्वतंत्र रूप से भी ये प्रतिमाएं विद्यमान है।16

सातबीस देवरी मूल मंदिर के बाह्य सभामण्डप के दक्षिण–पश्चिमी भाग में पश्चिमाभिमुखी। (देखिये चित्र संख्या–17 अ) सातबीस देवरी मूल मंदिर के बाह्य सभामण्डप के दक्षिण–पूर्वी भाग में दक्षिणाभिमुखी। (देखिये चित्र संख्या–16 स), सातबीस देवरी मूल मंदिर के बाह्य सभामण्डप के दक्षिण–पूर्वी भाग में दक्षिणाभिमुखी।(देखिये चित्र संख्या–17 ब), उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के बाह्य सभामण्डप के दक्षिण पश्चिमी भाग में दक्षिणाभिमुखी युगल यमदेव की प्रतिमा के दांयी तथा बांयी ओर। (देखिये चित्र संख्या–17 स)

निष्कर्षः–

सौन्दर्यप्रियता तथा सजावट एक मानवीय प्रवृत्ति है, जिसके कारण वह हर वस्तु चाहे प्राकृतिक हो या मानव निर्मित उसे वह सजी–संवरी देखने में आनन्द प्राप्त होता है। मनोहारी वस्तुओं की ओर आकर्षित होना मानव की विशिष्ट अभिरुचि है। सम्भवतः इसी कारण शिल्पियों ने देवालयों में देव प्रतिमाओं के साथ ही जगह–जगह पर मंदिरों के प्रवेश द्वार, स्तम्भों, वितानों, मण्डोवर आदि स्थानों पर विभिन्न प्रकार की अप्सराओं के अलंकरणात्मक स्वरूप उकेरे हैं। सातबीस देवरी मंदिर परिसर में भी शिल्पकारों ने अप्सराओं का सुन्दर अंकन किया है। सभी स्थानों पर बनी अप्सराओं की प्रतिमाओं के कानों में कुण्डल, हार स्तनसूत्र, केशविन्यास, कटिसूत्र, हाथों मे कड़े, पादवलय, पाद जालक आदि आभूषणों क अंकन किया हैं। केश सज्जा मे जूड़े के अलावा गूंथी हुई वेणी व बीच में मांग का अंकन किया गया है। अप्सराओं के लिए लम्बे अपारदर्शी वस्त्रों का अधिक प्रयोग किया गया है। किन्तु कुछ प्रतिमाएं यथा– सद्यस्नाता इनका अपवाद भी है, जो वस्त्रविहीन प्रतीत हो रही है। इनमें स्थानीय प्रभाव स्पष्ट झलकता हैं। मूर्तिकारों ने सांस्कृतिक परिवेश का समावेश ढोलक, वीणा, बांसुरी, शहनाई आदि वाद्ययंत्रों को बजाते हुए व नृत्य में मग्न अप्सराओं को उत्कीर्ण किया गया है। ये अप्सराएं तत्कालीन समय के सांस्कृतिक परिवेश का उल्लेख कर रही है कि उस समय भी संगीत, नृत्य और वाद्ययंत्रों को कितना महत्व दिया जाता था। इस प्रकार मूर्तिकारों ने इन प्रतिमाओं के माध्यम से सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाने का प्रयास किया है।

संदर्भः–

1 ए. एल. जैन, अतुल्य जैन धर्म एवं गढ़ चित्तौड़, श्री जैन श्वेताम्बर सातबीस देवरी किला तीर्थ ट्रस्ट,चित्तौड़गढ़, मार्च 2014 पृ. सं. 29.

2 .ए. एल. जैन, अतुल्य जैन धर्म एवं गढ़ चित्तौड़, श्री जैन श्वेताम्बर सातबीस देवरी किला तीर्थ

ISSN: 3108-0367 https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.5

ट्रस्ट, चित्तौड़गढ़, मार्च 2014 पृ. सं. 30–31.

3 .सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–4 (अ, ब, स, द, य, र, ल)

4 .सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–5(अ, ब, स, द)

5 .सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–6(अ, ब, स, द, य, र, ल, व, श, ष, स, ह)

6 .सातबीस देवरी मूल मंदिर, दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग, चित्र संख्या–7 (अ, ब, स, द, य, र, ल, व, श, ष, स, ह)

7 उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर का मंडोवर भाग, चित्र संख्या–8

8 .उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर का मंडोवर भाग, चित्र संख्या–9

9 सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–10 (अ,ब, स, द, य, र, ल, व, श, ष, स)

10. सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–11 (अ, ब, स, द, य, र, ल)

11. उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–12 (अ, ब, स)

12. उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–13 (अ, ब, स)

13. उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर भाग, चित्र संख्या–14 (अ, ब)

14. सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–15 (अ, ब, स)

15. सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–16 (अ, ब, स)

16. सातबीस देवरी मूल मंदिर, उत्तरी पार्श्वनाथ मंदिर के मंडोवर व सभामण्डप भाग, चित्र संख्या–17 (अ, ब, स)